International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 22-23

नाथ सम्प्रदाय : योग, तंत्र, आयुर्वेद, बौद्ध अध्ययन, एवं हिन्दी के क्षेत्र में साहित्य सर्वेक्षण

[1] उमाशंकर कौशिक, [2] डॉ0 उपेन्द्र बाबु खत्री, [3] डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह, [4] डॉ0 राहुल सिद्धार्थ

[1] शोधार्थी पी–एच0 डी0 योग विभाग, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, बारला, रायसेन मध्य प्रदेश, भारत।
[2] सहायक प्राध्यापक योग विभाग, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, बारला, रायसेन मध्य प्रदेश, भारत।
[3] सहायक प्राध्यापक आयुर्वेद विभाग, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, बारला, रायसेन मध्य प्रदेश, भारत।
[4] सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, बारला, रायसेन मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

नाथ सम्प्रदाय का उल्लेख विभिन्न क्षेत्र के ग्रंथों में जैसे–योग (हठयोग) तंत्र (अवधूत मत या सिद्ध मत) आयुर्वेद (रसायन चिकित्सा) बौद्ध अध्ययन (सहजयान तिब्बतियन परम्परा 84 सिद्धों में) हिन्दी (आदिकाल के कवियों के रूप) में चर्चा मिलती हैं।

यौगिक ग्रंथों में नाथ सिद्ध:– हठप्रदीपिका के लेखक स्वात्माराम और इस ग्रंथ के प्रथम टीकाकार ब्रह्मानंद ने हठ प्रदीपिका ज्योत्स्ना के प्रथम उपदेश में 5 से 9 वे श्लोक में 33 सिद्ध नाथ योगियों की चर्चा की है। ये नाथसिद्ध कालजयी होकर ब्रह्माण्ड में विचरण करते है। इन नाथ योगियों में प्रथम नाथ आदिनाथ को माना गया है जो स्वयं शिव है जिन्होंने हठयोग की विद्या प्रदान की जो राजयोग की प्राप्ति में सीढ़ी के समान है।

आयुर्वेद ग्रंथों में नाथ सिद्धों की चर्चा – रसायन चिकित्सा के उत्पत्ति करता के रूप प्राप्त होता है। जिन्होंने इस शरीर रूपी साधन को जो मोक्ष में माध्यम है इस शरीर को रसायन चिकित्सा पारद और अभ्रक आदि रसायानों की उपयोगिता सिद्ध किया। पारदादि धातु घटित चिकित्सा का विशेष प्रवर्त्तन किया था तथा विभिन्न रसायन ग्रंथों की रचना की उपरोक्त कथन सुप्रसिद्ध विद्वान और चिकित्सक महामहोपाध्याय श्री गणनाथ सेन ने लिखा है।

तंत्र गंथों में नाथ सम्प्रदाय – नाथ सम्प्रदाय के आदिनाथ शिव है, मूलतः समग्र नाथ सम्प्रदाय शैव है। शाबर तंत्र में कपालिको के 12 आचार्यों की चर्चा है– आदिनाथ, अनादि, काल, वीरनाथ, महाकाल आदि जो नाथ मार्ग के प्रधान आचार्य माने जाते है। नाथों ने ही तंत्र गंथों की रचना की है। षोड्श नित्यातंत्र में शिव ने कहा है कि – नव नाथों– जडभरत मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ,, सत्यनाथ, चर्पटनाथ, जालंधरनाथ नागार्जुन आदि ने ही तंत्रों का प्रचार किया है।

बौद्ध अध्ययन में नाथ सिद्ध 84 सिद्धों में आते है। राहुल सांकृत्यायन ने गंगा के पुरात्त्वांक में बौद्ध तिब्बतियन परम्परा के 84 सहजयानी सिद्धों की चर्चा की है। जिसमें से अधिकांश सिद्ध नाथसिद्ध योगी है जिनमें लुइपाद मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षपा गोरक्षनाथ, चौरंगीपा चौरंगीनाथ, शबरपा शबर आदि की चर्चा है जिन्हें सहजयानीसिद्धों के नाम से जाना जाता है।

हिन्दी में नाथसिद्ध :– हिन्दी साहित्य में आदिकाल के कवियों में नाथ सिद्धों की चर्चा मिलती है।

चर्चा है। अपभ्रंस, अवहट्ट भाषाओं की रचनाऐं मिलती है जो हिन्दी की प्रारंभिक काल की है। इनकी रचनाओं में पाखंड़ों आडंबरो आदि का विरोध हैं तथा इन्की रचनाओं में चित्त, मन, आत्मा, योग, धैर्य, मोक्ष आदि का समावेश मिलता है जो साहित्य के जागृति काल की महत्वपूर्ण रचनाऐं मानी जाती है। जो जनमानष को योग की शिक्षा, जनकल्याण तथा जागरूकता प्रदान करने के लिए था।

मूलशब्द: योग, आयुर्वेद, तंत्र, बौद्ध अध्ययन, हिन्दी, नाथ सम्प्रदाय

प्रस्तावना

साहित्य सर्वेक्षण

गोरक्षनाथ कृत सिद्धसिद्धांत पद्धति में नाथ योगियों को योगमत या योग सम्प्रदाय नाम से जाना जाता है क्योंकि इनका मुख्य धर्म योगाभ्यास ही रहा है। उनके विभिन्न प्रमाणिक ग्रंथों से स्पष्ट हो जाते है। नाथ सिद्ध विविध विषयों के ग्रंथों– योग, आयुर्वेद, तंत्र, बौद्ध अध्ययन, हिन्दी आदि में इनकी महत्वपूर्ण ग्रंथ या रचनाऐं प्राप्त होती है।

यौगिक ग्रंथों में नाथ सम्प्रदाय

नाथ सम्प्रदाय मुख्यतः योगाभ्यास धर्म का पालन करते थे। हठ योग विद्या, नाड़ी तंत्र, षट्कर्म, आसन, कुम्भक (प्राणायाम) मुद्रा व बंध, कुण्लिनी, शून्यसमाधि आदि की चर्चा इनके विभिन्न ग्रंथों से प्राप्त होते है जो निम्न है–

1. सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, 2. हठप्रदीपिका 3. गोरक्ष सिद्धात संग्रह 5. हठरत्नावली 6. वर्णरत्नाकर 7. शिव संहिता 8. वशिष्ठ संहिता 9. घेरण्ड संहिता 10. छान्दोग्य उपनिषद् 11. तेजोबिन्दूपनिषद् 12. अवधूत गीता 13. कैवल्योपनिषद् 14. सूतसंहिता, 15. ब्रह्मबिन्दुउपनिषद् 16. अमनस्क 17. विवेकमार्तण्ड 18. मुण्डक उपनिषद् 19. भागवत 20. गोरक्षउपनिषद् 21. कालाग्निरूद्र उपनिषद् 22. शाबर तंत्र 23. षोडश नित्यातंत्र 24. षट्शांभव रहस्य 25. कपिल गीता 26. तारासूक्ति 27. कलार्णव तंत्र 28. श्री नाथ सूत्र 29. शिवपुराण 30. योगदर्शन (बंगाक्षरों में) 31. आदिनाथ संहिता 32. गोरखनाथ एण्ड कन्फटा योगी 33. गोरखबानी 34. महार्थमंजरी 35. योगी सम्प्रदाय विष्कृति 36. साधन माला 37. योग शास्त्र 38. नाथ फिलॉसफी एण्ड अष्टांग योग आदि।

तंत्र ग्रंथों में नाथ सिद्ध

तंत्राधिपति, मंत्राधिपति स्वयं शिव है, वही आदिनाथ है। ''षोडश नित्यातंत्र'' में भगवान शिव ने कहा है कि नव नाथों ने जिसमें जड़भरत, नागार्जुन, सत्यनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ, चर्पटनाथ, जालंधर आदि ने ही तंत्र गंथों की रचना की ही और इनका प्रचार

किया है। बौद्ध तंत्र में सहजयानी परम्परा के सिद्ध कन्हपाद, जालंधरपाद अपने को कपालिक कहते है जिन्होंने तांत्रिक साधनाऐं की थी।

तंत्रग्रंथों में नाथ सम्प्रदाय से संबंधित ग्रंथ निम्न हैं– 1. कौलमार्ग रहस्य, 2. कौलज्ञान निर्णय, 3. कौलावली निर्णय 4. गंभीरनाथ प्रसंग 5. अमरौघशासनम् 6. गोरखनाथ ऐण्ड मिडिएवल हिंदू मिस्टिसिज्म, 7. जर्नल ऑफ दि डिपार्टमेंट ऑफ लेटर्स, 8. ज्ञानसिद्धि, 9. दि इंडियन बुद्धिष्ट आईकोनेग्राफी मेनली बेस्ड अपॉन दि साधनमाला ऐण्ड अदर कांग्रेट तांत्रिक टेक्सट्स, 10. दि सर्पेन्ट पॉवर, 11. दि सेन्सस ऑफ इण्डिया, 12. परशुराम कल्प सूत्र, 13. प्राण संकली, 14. गोरखनाथ ऐण्ड कन्फटा योगिज, 15. भारतीय दर्शन, 16. महार्थमंजरी, 17. मालतीमाधवम्, 18. बामकेश्वर तंत्रान्तर्गत नित्याषोडशिकार्णवः, 19. सिद्ध सिद्धांत संग्रह, 20. स्टडीज इन दि तन्त्र, 21. सनातन साधना की धारा आदि गंथों है।

आयुर्वेद ग्रंथों (रसायन शास्त्रों) में नाथ सम्प्रदाय

नाथसिद्धों का मत है कि आयुर्वेद का रसायन शास्त्र आदिनाथ महादेव का उपदिष्ट है। पारा शिव का वीर्य है और अभ्रक पार्वति का रजः है। इन दानों के मिश्रण से यंत्र विशेष से उर्ध्वपातित करने से शरीर को अमर बनाने वाला रस तैयार होता है इन्हीं से ही रसेश्वरमत का आविष्कार हुआ। अनेक नाथ सिद्ध योगियों द्वारा लिखित विभिन्न ग्रंथ निम्न है–

1. गोरक्षनाथ – प्राण संकली
2. नित्यनाथ – रसरत्नाकर, रसखंड, और रसेन्द्रखण्ड, रसरत्नमाला(अमुद्रित)
3. शालिनाथ– रसमंजरी
4. काकचण्डीश्वर – काकचण्डेश्वरीमत तंत्र
5. मथान भैरव – रसरत्न
6. सिद्धनागार्जुन – नागार्जुन तंत्र, रस रत्नाकर (अमुद्रित)

आदि आयुर्वेदिक रसायन चिकित्सा ग्रंथ उपलब्ध है।

बौद्ध तंत्र में नाथ सिद्ध

बौद्ध तंत्र में नाथ सिद्धों का बड़ा गहरा प्रभाव रहा है। ''वर्णरत्नाकर'' नामक ग्रंथ उपलब्ध है जिनके ग्रंथकार कविशेखराचार्य ज्योतिरिश्वर है जो मिथिला के राजा हरिदेव 1300–1321ई. के सभासद थे। इनमें 84 सिद्धों की बात कही गयी है तथा उनमें 76 नाथ सिद्धों का ही नाम आया है। राहुल सांकृत्यायन द्वारा ''गंगा के पुरात्त्वांक''में तिब्बती परम्परा (बौद्ध–सहजयानी) के जो 84 सिद्धों का नाम आया हैं। इन दोनों ग्रंथों से सिद्धों के नामों को मिलान करने पर अधिकतर सिद्ध नाथ योगी परम्परा के जान पड़ते है। ऐसा प्रमाण मिलते है कि भारत से पद्मसंभव के 725 ई.तिब्बत जाने के बाद सहजयानी परम्परा के अनेक सिद्ध बने थे। सिद्ध नाथ योगियों और बौद्ध तंत्र सिद्धों से संबंधित ग्रंथ निम्नवत हैं–

1. बौद्ध गायन दोहा, 2. चर्यापद 3. मालती माधवम् 4. वर्णरत्नाकर 5. गंगा के पुरात्त्वांक 6. चर्याचर्यविनिश्चय 7. तारानाथ 8. अद्वयवज्रसंग्रह 9. दि ट्राइबल एण्ड कास्ट्स ऑफ सेन्ट्रल प्रार्विसेज ऑफ इंडिया 10. कौलावली निर्णय 11. दि ट्राइबल एण्ड कास्ट्स ऑफ दि नार्थ वेस्टर्न 12. योगिसंप्रदायाविष्कृति, 13. तिल्लोपाद का दोहा कोष, 14. सरहपाद का दोहा कोष, 15. कण्हपाद का दोहाकोष 16.प्रकीर्ण दोहा संग्रह 17. विश्वभारतीय पत्रिका खण्ड 4, अंक 1, 18. गोरखनाथ एण्ड कनफटा योगी आदि ग्रंथ प्रमुख है।

हिन्दी साहित्य में नाथ सम्प्रदाय

हिन्दी के आदिकाल में नाथसिद्धों की रचनाओं को देखते हुए उन्हें आदिकावि की संज्ञा दी गयी है इनकी कविताओं में अपभ्रंश, अवहट्ट आदि हिन्दी की पुरानी शैली का समावेश मिलता है। इनकी रचनाओं चेतना, मन, मोक्ष, सहजानंद, आदि विषयों का समावेश मिलता है तथा आडंबर, पाखंड की निंदा की गयी है बाद के भक्तिकालीन कवियों में भी नाथसिद्धों की साधनाओं व रचनाओं का प्रभाव रहा।

जिसमें कबीर, नानक, तुलसी, रविदास, आदि की रचनाओं में मिलता है। हिंदी की विभिन्न ग्रंथों में इनकी जानकारी उपलब्ध है जो निम्न है–

1. नाथ सम्प्रदाय, 2. गंगाके पुरात्त्वांक, 3. चर्यापद, 4. दोहा कोष, 5. सबदी 6. प्राणसंकली, 7. गोरखबानी, 8. जायसी ग्रंथावली, 9. ज्ञानसिद्धि, 10. ज्ञानेश्वर चरित्र, 11. नागर सर्वस्व, 12. पदुमावती, 13. परसंगपूरनभगत, 14. प्रबंध चितामणि, 15. बांग्ला साहित्येर इतिहास, 16. भरधरी चरित्र, 17. बौद्ध गान दोहा, 18. भारतीय दर्शन, 19. भ्रमर गीत सार, 20. राजपूताने का इतिहास, 21. हिंदी साहित्य का इतिहास 22. कबीर, आदि ग्रंथों में इनकी जानकारी मिलती है।

उपसंहार

उपरोक्त वर्णित विविध ज्ञान के क्षेत्रों योग, आयुर्वेद, तंत्र, बौद्ध अध्ययन, हिन्दी आदि के क्षेत्रों में नाथ सिद्धों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है इन विविध क्षेत्रों में इनकी उपस्थिति इन सम्प्रदाय के ज्ञान के प्रकाश को प्रदर्शित करता है। इन नाथ सिद्धों में आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, नागार्जुन, जालंधर, कृष्णपाद, चौरंगीनाथ, कपाली, चर्पटनाथ आदि प्रमुख थे जिनका ज्ञान के विविध क्षेत्रों में विशेष योगदान रहा है जो अविष्मरणीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अमरौघशासनम् सिद्धगोरक्षनाथ–विरचित, महामहोपाध्याय पं. मुकुदराम शास्त्री द्वारा संपादित, काश्मीर संस्कृत ग्रंथावलि, ग्रथांक 20 बम्बई 1918.
2. अष्ट्यवज्रसंग्रह गायकवाड ओरिएण्टल सीरीज, नं. 40, बडौदा, 1927.
3. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रेलिजन ऐण्ड एथिक्स।
4. कबीर हजारी प्रसाद द्विवेदी, मुम्बई हिंदी ग्रंथ रत्नाकर 1942.
5. कौलज्ञान निर्णय, डॉ. प्रबोधचंद्र बागची द्वारा सम्पादित कलकत्ता संस्कृत सीरीज, नं.3 कलकत्ता 1924।
6. ब्रिग्स, गोरखनाथ ऐण्ड कनफटा योगीज, श्री जार्ज बेस्टन ब्रिग्स, लिखित कलकत्ता, 1938।
7. भारतवर्षीय उपासक सम्प्रदाय (बाग्ला) श्री अक्षय कुमार दत्त, कलकत्ता 1314, बंगाब्द (द्वितीय संस्करण)।
8. मालती माधवम्, जगद्वर कृत टीकासहित, एम.आर.काले द्वारा संपादित, बम्बई 1928।
9. शारदा तिलक तंत्रम्, आर्थर एवेलान द्वारा संपादित कलकत्ता 1933।
10. श्री गुह्य समाज तंत्र, गायकवाड़ सीरीज नं. 53, 1931।
11. सिद्धसिद्धांत संग्रह, म.म.प. गोपीनाथ कविराज संपादित, सरस्वती भवन टेक्सट्स, 13 काशी 1925।
12. हठप्रदीपिका स्वात्माराम कृत, संस्करणकर्ता दिगम्बर झा, कैवल्यधाम लोनावला पुणे 2001।